AGRAWAL
EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

2011-2022 के पेपर्स का विश्लेषण चार्ट का समावेश

CTET 2022

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

NCERT पैटर्न पर आधारित

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

PAPER- I (कक्षा 1 से 5) **एवं**
PAPER- II (कक्षा 6 से 8)

NEW
4 in1 Textbook

Best Text book!

इस पुस्तक की थ्योरी CTET 2021 व 2022 के पाठ्यक्रम एवं विगत् वर्षों में पूछे गये प्रश्नों पर आधारित है।

इस पुस्तक का गहन अध्ययन करने से आप CTET बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र के प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते हैं।

- सम्पूर्ण थ्योरी CTET पाठ्यक्रम एवं विगत वर्षों के प्रश्नों पर आधारित
- वर्ष 2011 से 2021 तक के सभी प्रश्न अध्यायवार एवं व्याख्यात्मक हल सहित
- अभ्यास प्रश्नों का अध्यायवार समावेश
- 23 दिस. 2021, 3 जन. 2022 और 7 जन. 2022 के CTET पेपर्स के बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र विषय के प्रश्नों का हल सहित समावेश।

Code	Price	Pages
CB920	₹ 249	318

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

Student's Corner

⊙ **Agrawal Examcart Help Centre** ix
⊙ **परीक्षा की तैयारी करने की Best Strategy** x
⊙ **Current Affairs! की 100% सटीक तैयारी कैसे करें ?** xi
⊙ **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पाठ्यक्रम** xii
⊙ **CTET (1-5) (6-8) के पिछले वर्षों के हल प्रश्न–पत्रों का विश्लेषण चार्ट** xiv

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र 1-293

1. बाल-मनोविज्ञान 1-10

- मनोविज्ञान
- बाल-मनोविज्ञान का अर्थ
- शिक्षा-मनोविज्ञान की प्रकृति एवं विशेषताएँ
- शिक्षा-मनोविज्ञान का क्षेत्र
- मनोविज्ञान का विकास
- शिक्षा-मनोविज्ञान
- शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्य
- शिक्षा-मनोविज्ञान की विधियाँ

2. विकास की अवधारणा एवं उसका अधिगम से सम्बन्ध 11-29

- विकास की अवधारणा
- विकास की प्रकृति
- मानव के विकास की अवस्थाएँ
- मानव विकास के विभिन्न पक्ष
- वृद्धि की अवधारणा
- वृद्धि की प्रकृति
- विकास की प्रमुख अवस्थाएँ
- विकास एवं अधिगम

3. बाल विकास के सिद्धान्त 30-35

- बाल विकास
- बाल विकास की आवश्यकता
- बाल विकास के सिद्धान्त
- बाल विकास के क्षेत्र
- बाल विकास का महत्व
- बाल विकास के सिद्धान्तों का शैक्षिक महत्व

4. (आनुवंशिकता) वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव 36-44

- आनुवंशिकता की अवधारणा
- आनुवंशिकता की प्रक्रिया
- वातावरण की अवधारणा
- आनुवंशिकता व वातावरण का सम्बन्ध
- आनुवंशिकता का नियम
- आनुवंशिकता का प्रभाव
- वातावरण का प्रभाव
- आनुवंशिकता तथा वातावरण का शैक्षिक महत्व

5. समाजीकरण की प्रक्रिया : सामाजिक दुनिया और बच्चे 45-50

- समाजीकरण का अर्थ
- समाजीकरण की अवस्थाएँ
- समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका
- समाजीकरण के एजेंट और एजेंसियाँ
- समाजीकरण की विशेषताएँ
- समाजीकरण की प्रक्रिया में अभिभावक की भूमिका
- समाजीकरण की प्रक्रिया में मित्र की भूमिका

6. पियाजे, कोहलबर्ग, वाइगोत्सकी : निर्माण और आलोचनात्मक दृष्टिकोण **51-74**

- जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त
- जीन पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धान्त
- लॉरेंस कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धान्त
- वाइगोत्स्की के संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त

7. बाल केन्द्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा **75-82**

- बाल केन्द्रित शिक्षा की अवधारणा
- बाल केन्द्रित शिक्षा की विशेषताएँ
- बाल केन्द्रित शिक्षा के सिद्धान्त
- बाल केन्द्रित शिक्षा का महत्व
- बाल केन्द्रित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका
- प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा
- प्रगतिशील शिक्षा का महत्व

8. बुद्धि के निर्माण का आलोचनात्मक दृष्टिकोण एवं बहुआयामी बुद्धि **83-102**

- बुद्धि की संकल्पना
- बुद्धि की विशेषताएँ
- बुद्धि के प्रकार
- बुद्धि के सिद्धान्त
- भारत में बुद्धि परीक्षण
- बुद्धि का मापन
- बुद्धि परीक्षण के प्रकार
- मानसिक आयु व बुद्धि-लब्धि
- बुद्धि परीक्षाओं की उपयोगिता
- संवेगात्मक बुद्धि
- बहुआयामी बुद्धि सिद्धान्त
- बहुआयामी बुद्धि सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ

9. भाषा और विचार (चिंतन) **103-112**

- भाषा
- भाषा की विशेषताएँ
- भाषा विकास की अवस्थाएँ
- भाषा विकास के चरण
- भाषा का महत्व
- विचार/चिन्तन
- पियाजे का विचार
- भाषा एवं चिन्तन

10. सामाजिक निर्माण के रूप में लिंग : लिंग की भूमिका, लिंगीय भेद और शैक्षिक अभ्यास **113-120**

- लिंग की भूमिका
- लिंगीय भेद या पक्षपात
- लिंगीय भेद या पक्षपात के शैक्षिक अभ्यास

11. व्यक्तिगत विभिन्नता **121-130**

- व्यक्तिगत विभिन्नता का अर्थ
- व्यक्तिगत विभिन्नता की विशेषताएँ
- व्यक्तिगत विभिन्नता के प्रकार
- व्यक्तिगत विभिन्नता की विधियाँ
- व्यक्तिगत विभिन्नता को भाषा, जाति, लिंग, समुदाय के आधार पर समझना
- वैयक्तिक भिन्नता के कारण
- वैयक्तिक भिन्नताओं का मापन
- वैयक्तिक भिन्नता का शैक्षिक निहितार्थ

12. आकलन तथा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन **131-153**

- आकलन का अर्थ
- आकलन की विशेषताएँ
- अधिगम का आकलन एवं अधिगम के लिए आकलन में अन्तर
- विद्यालय आधारित आकलन
- विद्यालय आधारित आकलन की विशेषताएँ
- मूल्यांकन
- मूल्यांकन के उद्देश्य
- मूल्यांकन का वर्गीकरण
- मूल्यांकन की उपयोगिता
- मूल्यांकन की प्रविधियाँ एवं उपकरण

- अच्छे टेस्ट की विशेषताएँ
- मूल्यांकन के परीक्षण
- मापन के प्रकार
- मापन और मूल्यांकन में अन्तर
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएँ
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रकृति
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की मान्यताएँ
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य
- मूल्यांकन के प्रकार
- मापन का अर्थ
- मापन के स्तर
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का महत्व
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रकार
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लाभ

13. उपलब्धि परीक्षण का निर्माण **154-160**

- उपलब्धि परीक्षण
- उपलब्धि परीक्षण के प्रकार
- निबन्धात्मक परीक्षण या आत्मनिष्ठ परीक्षण
- उपलब्धि परीक्षण की विशेषताएँ
- अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण
- उपलब्धि परीक्षण का निर्माण

14. अलाभान्वित एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठभूमियों के अधिगमकर्ता की पहचान **161-178**

- समावेशी शिक्षा
- समावेशी शिक्षा के उद्देश्य
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों का वर्गीकरण
- विविध पृष्ठभूमियों के लिए अधिगमकर्ताओं की पहचान
  1. पिछड़े बालक
  2. मानसिक मन्दित बालक
  3. समस्यात्मक बालक
  4. सीखने की कम क्षमता वाले बालक
  5. बाल अपराधी बालक
  6. वंचित एवं अलाभान्वित वर्ग
- समावेशी विद्यालय
- समावेशी शिक्षा की प्रकृति
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा
- शिक्षा का अधिकार, 2009

15. अधिगम अयोग्यताएँ एवं अक्षमता वाले बालकों की आवश्यकताओं की पहचान **179-195**

- अधिगम अयोग्यता
- अस्थि विकलांग बालक
- अक्षमता वाले बालकों का वर्गीकरण
- बहुल विकलांगता

16. प्रतिभाशाली, सृजनात्मक, विशेष योग्यता वाले बालकों की पहचान **196-205**

- प्रतिभाशाली बालक
- विशेष योग्यता वाले बालक
- सृजनशील बालक

17. बालक कैसे सोचते हैं व सीखते हैं? **206-212**

- चिन्तन का अर्थ
- बालक किस प्रकार चिन्तन (सोचते) और अधिगम (सीखते) हैं ?
- बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं ?
- चिन्तन के प्रकार
- बच्चे सीखते कैसे हैं ?

18. शिक्षण व अधिगम की मूल प्रक्रियाएँ (शिक्षाशास्त्र) **213-244**

- शिक्षण का अर्थ
- शिक्षण की विशेषताएँ
- शिक्षण के सिद्धान्त
- अधिगम की विशेषताएँ
- शिक्षण एवं अधिगम की अवधारणा
- शिक्षण और अधिगम का औचित्य
- शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया
- फ्लैण्डर्स विश्लेषण की दस श्रेणियाँ
- फ्लैण्डर्स विधि की सीमाएँ
- शिक्षण–अधिगम की व्यूह रचनाएँ
- शिक्षण–अधिगम की नीतियाँ
- अधिगम एक सामाजिक क्रिया के रूप में
- शिक्षण के उद्देश्य
- शिक्षण की अवस्थाएँ
- शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम)
- सूक्ष्म शिक्षण का भारतीय प्रतिमान
- शिक्षण कौशल की विशेषताएँ
- शिक्षण के प्रकार
- शिक्षण के उद्देश्य
- अधिगम का अर्थ
- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
- शिक्षण और अधिगम में सम्बन्ध
- शिक्षण–अधिगम के सिद्धान्त
- फ्लैण्डर्स अन्त:क्रिया विश्लेषण
- निरीक्षण के नियम
- शिक्षाशास्त्र
- शिक्षण की विधियाँ
- विभिन्न प्रकार की शिक्षण–अधिगम नीतियाँ
- अधिगम का सामाजिक संदर्भ
- शिक्षण सूत्र
- शिक्षण के स्तर
- सूक्ष्म शिक्षण
- शिक्षण के आधारभूत कौशल
- महत्वपूर्ण शिक्षण कौशलों का विवरण

19. समस्या-समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक **245-251**

- समस्या-समाधान का अर्थ
- समस्या-समाधान की विधियाँ
- कक्षा में समस्या–समाधान को प्रभावित करने वाले कारक
- बालक एक समस्या-समाधानकर्ता के रूप में
- समस्या-समाधान का महत्व
- समस्या-समाधान की विशेषताएँ
- समस्या-समाधान व्यवहार के शिक्षण में सम्मिलित सोपान
- समस्या-समाधान एवं शिक्षक
- समस्या-समाधान की वैज्ञानिक विधि
- बालक एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में

20. बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ एवं बच्चों की त्रुटियाँ **252-274**

- अधिगम
- बैण्डुरा का सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त
- अधिगम के शैक्षिक उद्देश्य
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ
- एरिक्सन का मनो-सामाजिक विकास का सिद्धान्त
- बच्चों की त्रुटियों को अधिगम प्रक्रिया में सार्थक कड़ी के रूप में समझना

21. संज्ञान और संवेग **275-282**

- संज्ञान का अर्थ
- ब्लूम के वर्गीकरण का संज्ञानात्मक क्षेत्र
- संवेग के प्रकार
- संज्ञान की विशेषताएँ
- संवेग

22. अभिप्रेरणा और अधिगम : अधिगम में योगदान देने वाले कारक **283-293**

- अभिप्रेरणा का अर्थ
- अभिप्रेरणा के सोपान
- अभिप्रेरणा के सिद्धान्त
- आवश्यकता, प्रणोदन और प्रोत्साहन
- अभिप्रेरणा और सीखना में सम्बन्ध
- व्यक्तिगत से सम्बन्धित कारक
- अभिप्रेरणा की विशेषताएँ
- अभिप्रेरणा के प्रकार
- अभिप्रेरणा की प्रविधियाँ
- उपलब्धि–प्रेरक
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक : व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय
- पर्यावरण से सम्बन्धित कारक

सॉल्वड पेपर्स

☞ **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पेपर–I (1 to 5) हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 07-01-2022** **1-3**

☞ **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पेपर–II (6 to 8) हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 07-01-2022** **4-6**

☞ **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पेपर–I (1 to 5) हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 03-01-2022** **7-10**

☞ **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पेपर–II (6 to 8) हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 03-01-2022** **11-14**

☞ **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पेपर–I (1 to 5) हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 23-12-2021** **15-18**

☞ **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पेपर–II (6 to 8) हल प्रश्न–पत्र परीक्षा तिथि : 23-12-2021** **19-21**

अध्याय

1

बाल-मनोविज्ञान
(Child Psychology)

इस अध्याय में अंतर्निहित विषयवस्तु

- मनोविज्ञान
- मनोविज्ञान का विकास
- बाल मनोविज्ञान

मनोविज्ञान
(Psychology)

सरल शब्दों में, मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं, अनुभवों तथा व्यक्त व अव्यक्त दोनों प्रकार के व्यवहारों का एक क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन है। **'मनोविज्ञान' शब्द की उत्पत्ति दो ग्रीक शब्दों 'साइके' तथा 'लॉगस' से हुई है। ग्रीक भाषा में 'साइके' शब्द का अर्थ है 'आत्मा' तथा 'लॉगस' का अर्थ है 'शास्त्र' या 'अध्ययन'।** इस प्रकार पहले समय में मनोविज्ञान को 'आत्मा के अध्ययन' से सम्बद्ध विषय माना जाता था। आधुनिक काल में कलकत्ता विश्वविद्यालय में 1916 में मनोविज्ञान विभाग की स्थापना की गयी थी।

मनोविज्ञान के जनक → अरस्तू

गैरिट ने "मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान माना है।"

वाटसन "मनोविज्ञान, व्यवहार का निश्चित विज्ञान है।"

वुडवर्थ "मनोविज्ञान, वातावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।"

स्किनर "मनोविज्ञान, जीवन की सभी प्रकार की परिस्थितियों में प्राणी की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रक्रियाओं अथवा व्यवहार का तात्पर्य है–प्राणी की सब प्रकार की गतिविधियाँ, समायोजनाएँ, क्रियाएँ एवं अभिव्यक्तियाँ।"

वुडवर्थ के अनुसार, "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले मानव–व्यवहारों का विज्ञान है।"

कालसनिक के अनुसार, "मनोविज्ञान मानव–व्यवहार का विज्ञान है।"

मनोविज्ञान का विकास
(Development of Psychology)

भारतवर्ष में मनोविज्ञान का अध्ययन प्रारम्भ से ही दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता था। पहले मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र का एक अंग माना जाता था। मनोविज्ञान विकसित होता हुआ विज्ञान है। समय के परिवर्तन के साथ–साथ मनोविज्ञान के स्वरूप में भी परिवर्तन होता गया और कुछ वर्ष पूर्व ही यह एक स्वतंत्र विषय के रूप में सामने आया है। मनोविज्ञान के आधुनिक अर्थ को समझने के लिये उसका पूर्व इतिहास जानना आवश्यक है। दार्शनिक अरस्तू के समय में मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र का एक अंग था, किन्तु धीरे–धीरे यह दर्शनशास्त्र से अलग हो गया।

रेबर्न के अनुसार, "आधुनिक काल में परिवर्तन हुआ है, मनोवैज्ञानिकों ने धीरे–धीरे अपने विज्ञान को दर्शनशास्त्र से पृथक कर लिया है।"

मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र से किस प्रकार पृथक हुआ उसके अर्थ में किस प्रकार परिवर्तन हुआ तथा उसके वैज्ञानिक स्वरूप का आरम्भ और विकास किस प्रकार हुआ। इसका अध्ययन आगे किया जा रहा है।

1. **मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है** (Science of Soul)—16वीं शताब्दी में ग्रीस (Greece) नामक देश में दार्शनिकों ने इसके शाब्दिक अर्थ के अनुसार इसे 'आत्मा का अध्ययन' करने वाला विज्ञान माना। इन यूनानी दार्शनिकों में प्लेटो (Plato) अरस्तू तथा डैकार्ट (Descortes) उल्लेखनीय हैं। इन लोगों ने मनोविज्ञान का मुख्य कार्य आत्मा के विषय में विचार करना माना।
2. **मनोविज्ञान मन का विज्ञान है** (Science of Mind)—17वीं तथा 18 शताब्दी में जब मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान समझने में कठिनाई हुई तब दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को **'मन का विज्ञान'** कहा। इस शताब्दी के दार्शनिकों ने जिनमें **लिबिनिज, हॉब्स जॉन लॉक, कोट, ह्यूम पोम्पोलॉजी, थॉम्स रीड** आदि का नाम उल्लेखनीय है।

   आधुनिक मनोविज्ञान में मन को मान्यता नहीं दी जाती बल्कि **मानसिक क्रियाओं** को महत्व दिया जाता है।
3. **मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान है** (Science of Consciousness)—19वीं शताब्दी में विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा इसमें **विलियम जेम्स (William James), विलियम वुन्ट (William Wundt) तथा जेम्स सली (James Sully) आदि** प्रमुख थे। विलियम जेम्स के अनुसार मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा चेतना की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन और व्याख्या करती है। इनके अनुसार मनोविज्ञान मनुष्य की चेतना का अध्ययन करता है। इस परिभाषा पर विद्वान एक मत न हो सके और इसके विरुद्ध आपत्ति की गई और इसे अपूर्ण कहा गया है।
4. **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है** (Science of Behaviour)—20वीं शताब्दी के आरम्भ में व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक **प्रो. वाटसन** (Watson) ने 1913 में **जॉन हॉपीकन्स** विश्वविद्यालय में व्यवहारवाद को आरम्भ किया, उन्होंने मनोविज्ञान को 'व्यवहार का विज्ञान' कहा। वाटसन को व्यवहारवाद का जनक कहा जाता था। मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान मानने वाले **वैज्ञानिक ई.जी. पिल्सबरी थे। व्यवहार शब्द सर्वप्रथम 1905 में विलियम मैक्डूगल** ने दिया था।

मनोविज्ञान का वैज्ञानिक काल 1879 से शुरू हुआ है। इसी वर्ष **विलियम वुण्ट** (William Wundt) ने जर्मनी के लिपजिंग विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला खोली थी। वुण्ट सचेतन अनुभव (conscious experience) के अध्ययन में रुचि ले रहे थे और मन के अवयवों अथवा निर्माण की इकाइयों का विश्लेषण करना चाहते थे। वुण्ट के समय में मनोवैज्ञानिक अंतर्निरीक्षण (introspection) द्वारा मन की संरचना का विश्लेषण कर रहे थे, इसलिए उन्हें संरचनावादी कहा गया। अंतर्निरीक्षण एक प्रक्रिया थी जिसमें प्रयोज्यों से मनोवैज्ञानिक प्रयोग में कहा गया था कि वे अपनी मानसिक प्रक्रियाओं अथवा अनुभवों का विस्तार से वर्णन करें।

मनोविज्ञान का विकास विभिन्न 'स्कूल' (school) में कैसे हुआ और उन स्कूल पर वुण्ट के मनोविज्ञान का क्या प्रभाव पड़ा। मनोविज्ञान के ऐसे पाँच प्रमुख स्कूल हैं जिनका वर्णन निम्नांकित है—

1. **संरचनावाद** (Structuralism)—संरचनावाद जिसे अन्य नामों; जैसे—अन्तर्निरीक्षणवाद (introspectionism) तथा अस्तित्ववाद से भी माना जाता है। **संरचनावाद स्कूल को विल्हेल्म वुण्ट के शिष्य टिचेनर (Titchener) द्वारा अमेरिका के कोर्नेल विश्वविद्यालय (Corucle University) में 1892 में प्रारंभ किया गया। संरचनावाद के अनुसार मनोविज्ञान की विषय–वस्तु चेतन अनुभूति (conscious experience) थी।** टिचेनर ने चेतना (consciousness) तथा मन (mind) में अन्तर किया। चेतना से उनका तात्पर्य उन सभी अनुभवों (experiences) से था जो व्यक्ति में एक दिये हुए क्षण में उपस्थित होता है, जबकि मन से तात्पर्य उन सभी अनुभवों से होता है जो व्यक्ति में जन्म से ही मौजूद होते हैं। टिचेनर के अनुसार चेतना के तीन तत्व (elements) होते हैं–संवेदन (sensation), भाव या अनुराग (feeling or affection) तथा प्रतिमा या प्रतिबिम्ब (images)। टिचेनर ने अन्तर्निरीक्षण को मनोविज्ञान की प्रमुख विधि माना है।
2. **प्रकार्यवाद या कार्यवाद** (Functionalism)—**प्रकार्यवाद की स्थापना अनौपचारिक ढंग से विलियम जेम्स (William James) ने 1890 में** अपनी एक पुस्तक लिखकर जिसका शीर्षक **'प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी' (Principles of Psychology)** कर दी थी। उनका मानना था कि मनोविज्ञान का संबंध इस बात से है कि चेतना क्यों और कैसे कार्य करते हैं (Why and how the consciousness functions?) न कि सिर्फ इस बात से है कि चेतना के कौन–कौन से तत्व हैं? अतः जेम्स के अनुसार मनोविज्ञान की विषय–वस्तु तो चेतना अवश्य थी, परन्तु उन्होंने इसमें चेतना की कार्यात्मक उपयोगिता (functional utility) पर अधिक बल डाला। प्रकार्यवाद की औपचारिक स्थापना के संस्थापक के **रूप में डिवी (Dewey), एंजिल (Angell) तथा कार्र (Carr) को जाना** जाता है। प्रकार्यवाद के अनुसार मनोविज्ञान का संबंध मानसिक प्रक्रियाओं (mental processes) या कार्य (functions) के अध्ययन से होता है न कि चेतना के तत्वों (elements) के अध्ययन से होता है।
3. **व्यवहारवाद** (Behaviourism)—व्यवहारवाद की **संस्थापना वाटसन (Watson) द्वारा 1913 में** की गई। उनका मानना था कि मनोविज्ञान एक वस्तुनिष्ठ (objective) तथा प्रयोगात्मक (experimental) मनोविज्ञान है। अतः इसकी **विषय–वस्तु सिर्फ व्यवहार (behaviour) हो** सकता है चेतना नहीं क्योंकि सिर्फ व्यवहार का ही अध्ययन **वस्तुनिष्ठ प्रयोगात्मक ढंग से किया जा** सकता है। वाटसन के व्यवहारवाद ने उद्दीपक–अनुक्रिया (stimulus-response) को जन्म दिया।

   वाटसन ने अन्तर्निरीक्षण को मनोविज्ञान की विधि के रूप में अस्वीकृत किया और उन्होंने मनोविज्ञान की चार विधियाँ बताईं, जैसे—प्रेक्षण (observation), अनुबन्धन (conditioning), परीक्षण (testing) और शाब्दिक रिपोर्ट (verbal report)।
4. **गेस्टाल्ट मनोविज्ञान** (Gestalt Psychology)—गेस्टाल्ट स्कूल की स्थापना मैक्स वरदाईमर (Max Wertheimer) ने 1912 में किया। कोहलर (Kohler) तथा कौफ्का (Koffka) इस स्कूल के सह–संस्थापक (cofounders) थे। 'Gestalt" एक जर्मन शब्द है जिसका हिन्दी में रुपान्तर 'आकृति' (form), आकार (shape) तथा 'समाकृति' (configuration) किया गया है। गेस्टाल्ट स्कूल का मानना था कि मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं के संगठन (organization) का विज्ञान है।
5. **मनोविश्लेषण** (Psychoanalysis)—मनोविश्लेषण को एक स्कूल के रूप में सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud) ने स्थापित किया। फ्रायड के अचेतन (unconscious) का सिद्धान्त काफी महत्वपूर्ण माना गया है और उन्होंने सभी तरह के असामान्य व्यवहारों (abnormal behaviour) का कारण इसी अचेतन में होते बतलाया। अचेतन के बारे में अध्ययन करने की अनेक विधियाँ बतलाई जिनमें मुक्त साहचर्य विधि (free association method), सम्मोहन (hypnosis) तथा स्वप्न की व्याख्या (dream interpretation) सम्मिलित हैं।

भारत में मनोविज्ञान का विकास (Development of Psychology in India)—मानसिक प्रक्रियाओं तथा मानव चेतना, स्व, मन–शरीर के संबंध तथा अनेक मानसिक प्रकार्य; जैसे—संज्ञान, प्रत्यक्षण, भ्रम, अवधान तथा तर्कना आदि पर उनकी झलक के संबंध में केन्द्रित रही है। भारत में आधुनिक मनोविज्ञान के विकास को भारतीय परम्परा की गहरी दार्शनिक जड़ें भी प्रभावित नहीं कर सकी हैं।

भारतीय मनोविज्ञान का आधुनिक काल **कलकत्ता विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में 1915 में प्रारंभ हुआ** जहाँ प्रायोगिक मनोविज्ञान का प्रथम पाठ्यक्रम आरंभ किया गया तथा प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित हुई। **कलकत्ता विश्वविद्यालय ने 1916 में प्रथम मनोविज्ञान** विभाग तथा **1938 में अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान का विभाग प्रारम्भ किया।** प्रोफेसर एन. एन. सेन गुप्ता, जो वुण्ट की प्रायोगिक परम्परा में अमेरिका में प्रशिक्षण प्राप्त थे और उनसे बहुत प्रभावित थे। 1922 में प्रोफेसर गिरिन्द्र शेखर बोस मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष बने जो फ्रायड के मनोविश्लेषण में प्रशिक्षण प्राप्त थे।

प्रोफेसर बोस ने 'इंडियन साइकोएनालिटिक सोसाइटी' (Indian Psychoanalytic Society) की **स्थापना 1922 में की थी। 1924 में 'इंडियन साइकोलॉजिकल एशोसिएशन' (Indian Psychological Association) की स्थापना की गई।** 1938 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग में एक अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान (Applied Psychology) की शाखा भी खोली गई। इसके पश्चात् मैसूर विश्वविद्यालय एवं पटना विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के अध्यापन एवं अनुसंधान के प्रारंभिक केन्द्र प्रारम्भ हुए। 1960 के दशक के दौरान भारत में कई विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान का विश्वविद्यालय विभाग (University Department) की स्थापना की गई। विश्वविद्यालय के प्रांगण से हटकर मनोविज्ञान विभिन्न तरह के संस्थानों जैसे प्रबंधन संस्थान, शिक्षा संस्थान, रक्षा सेवा आदि में भी काफी लोकप्रिय हुआ और भारतीय मनोवैज्ञानिकों की सक्रियता इसमें काफी अधिक रही है। 1986 में दुर्गानन्द सिन्हा ने अपनी पुस्तक 'साइकोलॉजी इन ए थर्ड वर्ल्ड कन्ट्री : दि इंडियन एक्सपीरियन्स' में भारत में सामाजिक विज्ञान के रूप में चार चरणों में आधुनिक मनोविज्ञान के इतिहास को खोजा है।

आधुनिक मनोविज्ञान के विकास में कुछ रोचक घटनाएँ

1. 1879 विलहम वुण्ट (Wilhelm Wundt) ने लिपजिंग, जर्मनी में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला को स्थापित किया।
2. 1890 विलियम जेम्स (William James) ने 'प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी' प्रकाशित की।
3. 1895 मनोविज्ञान की एक व्यवस्था के रूप में प्रकार्यवाद की स्थापना।
4. 1900 सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud) ने मनोविश्लेषणवाद का विकास किया।
5. 1904 इवान पावलव (Ivan Pavlov) को नोबल पुरस्कार पाचन व्यवस्था के कार्य के लिए मिला जिससे अनुक्रियाओं के विकास के सिद्धान्त को समझा जा सका।

6. 1905 बीने (Binet) एवं साइमन (Simon) द्वारा बुद्धि परीक्षण का विकास।
7. 1916 कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रथम विभाग खुला।
8. 1920 जर्मनी में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का उदय हुआ।
9. 1922 मनोविज्ञान को इण्डियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन में सम्मिलित किया गया।
10. 1924 भारतीय मनोवैज्ञानिक एसोसिएशन की स्थापना हुई।
11. 1924 जॉन बी, वाट्सन (John B. Watson) ने व्यवहारवाद पुस्तक लिखी जिससे व्यवहारवाद की नींव पड़ी।
12. 1928 एन.एन सेनगुप्ता (N.N. Sengupta) एवं राधाकमल मुकर्जी (Radhakamal Mukerjee) ने सामाजिक मनोविज्ञान की प्रथम पुस्तक लिखी (लंदन: एलन और अनविन)।
13. डिफेंस साइंस आर्गेनाइजेशन ऑफ इंडिया में मनोवैज्ञानिक शोध खण्ड की स्थापना।
14. मानववादी मनोवैज्ञानिक कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) ने रोगी–केंद्रित चिकित्सा प्रकाशित की।
15. बी.एफ. स्किनर (B.F. Skinner) ने 'साइंस एंड ह्यूमन बिहेविअर' प्रकाशित की जिससे व्यवहारवाद को मनोविज्ञान के एक प्रमुख उपागम के रूप में बढ़ावा मिला।
16. 1954 मानववादी मनोवैज्ञाकि अब्राहम मैस्लो (Abraham Maslow) ने 'मोटिवेशन एंड पर्सनॉलटी' प्रकाशित की।
17. 1954 इलाहाबाद में मनोविज्ञानशाला की स्थापना।
18. 1955 बंगलौर में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेस (Nimhans) की स्थापना।
19. 1962 रांची में हॉस्पिटल फॉर मेंटल डिज़ीज़िज की स्थापना।
20. 1973 कोनराड लारेंज (Konrad Lorenz) तथा निको टिनबर्गेन (Niko Tinbergen) को उनके कार्य पशु व्यवहार की उपजाति विशिष्टता की अंतर्निर्मित शैली जो बिना किसी पूर्व अनुभव अथवा अधिगम के होती है, पर नोबल पुरस्कार मिला।
21. 1978 निर्णयन कर किए गए कार्य के लिए हर्बर्ट साइमन (Herbert Simon) को नोबल पुरस्कार प्राप्त।
22. 1981 डेविड ह्यूबल (David Hubel) एवं टार्स्टेन वीसल (Torsten Wiesel) को मस्तिष्क की दृष्टि कोशिकाओं पर शोध के लिए नोबल पुरस्कार प्राप्त।
23. 1981 रोजर स्पेरी (Roger Sperry) को मस्तिष्क विच्छेद अनुसंधान के लिए नोबल पुरस्कार प्राप्त।
24. 1989 नेशनल अकेडमी ऑफ साइकोलॉजी (NAOP) इंडिया की स्थापना।
25. 1997 गुड़गाँव, हरियाणा में नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर (NBRC) की स्थापना।
26. 2002 अनिश्चितता में मानव निर्णयन के अनुसंधान पर डेनियल कहनेमन (Daniel Kahneman) को नोबल पुरस्कार मिला।
27. 2005 आर्थिक व्यवहार में सहयोग एवं द्वंद्व की समझ में खेल सिद्धान्त के अनुप्रयोग के लिए थामस शेलिंग (Thomas Schelling) को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

बाल मनोविज्ञान का अर्थ
(Meaning of Child Psychology)

बालकों का अध्ययन जब मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है तो वह बाल मनोविज्ञान कहलाता है। बाल मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है–

अर्थात् बाल मनोविज्ञान का अर्थ विज्ञान की वह शाखा है जो बालकों के व्यवहारों का अध्ययन गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक करती है।

1. **क्रो** और **क्रो** के अनुसार–"बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल की प्रारम्भिक अवस्था से किशोरावस्था तक करता है।"
2. **आइजनेक** के अनुसार–"बाल मनोविज्ञान, बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से सम्बन्धित विज्ञान है, जो शिशु जन्म पूर्व, जन्म के समय, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वावस्था तक बालक में मनोवैज्ञानिक विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।"
3. **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार–"बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो प्राणी के विकास का अध्ययन जन्म से परिपक्वावस्था तक करती है।"

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा और मनोविज्ञान का अर्थ जानने के बाद यह बात स्पष्ट होती है कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मानव व्यवहार में रुपानतर लाना है और मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसका सम्बन्ध व्यावहारिक परिवर्तनों से है। शिक्षा–मनोविज्ञान से तात्पर्य शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करने से है। शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।

शिक्षा-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग है। **स्किनर** के शब्दों में–"शिक्षा-मनोविज्ञान उन खोजों का शैक्षिक परिस्थितियों में प्रयोग करता है जो कि विशेषतया मानव प्राणियों के अनुभव और व्यवहार से सम्बन्धित है।"

शिक्षा-मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना है–'शिक्षा' और 'मनोविज्ञान'। अत: इसका शाब्दिक अर्थ है–'शिक्षा-सम्बन्धी मनोविज्ञान'। दूसरे शब्दों में, यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है और शिक्षा की प्रक्रिया में मानव-व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। अत: हम **स्किनर** के शब्दों में कह सकते हैं–"शिक्षा-मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से, जो व्यवहार-सम्बन्धी विज्ञान है, ग्रहण करता है।"

"Educational psychology takes its meaning from education, a social process and from psychology, a behavioural science."

—Skinner

शिक्षा-मनोविज्ञान के अर्थ का विश्लेषण करने के लिए **स्किनर** (Skinner) ने निम्नलिखित तथ्यों की ओर संकेत किया है–

1. शिक्षा-मनोविज्ञान का केन्द्र, मानव-व्यवहार है।

2. शिक्षा-मनोविज्ञान, खोज और निरीक्षण से प्राप्त किए गए तथ्यों का संग्रह है।
3. शिक्षा-मनोविज्ञान में संगृहीत ज्ञान को सिद्धान्तों का रूप प्रदान किया जा सकता है।
4. शिक्षा-मनोविज्ञान ने शिक्षा की समस्याओं का समाधान करने के लिए अपनी स्वयं की पद्धतियों का प्रतिपादन किया है।
5. शिक्षा-मनोविज्ञान के सिद्धान्त और पद्धतियाँ शैक्षिक सिद्धान्तों और प्रयोगों को आधार प्रदान करते हैं।

स्किनर—"शिक्षा-मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिक्षा से सम्बन्धित सम्पूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।"

"Educational psychology covers the entire ranges of behaviour and personality as related to education." —**Skinner**

क्रो व क्रो—"शिक्षा-मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।"

"Educational psychology describes and explains the learning experiences of an individual from birth through old age."

—**Crow and Crow** (p. 7)

नॉल व अन्य—"शिक्षा-मनोविज्ञान मुख्य रूप से शिक्षा की सामाजिक प्रक्रिया से परिवर्तित या निर्देशित होने वाले मानव-व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित है।"

"Educational psychology is concerned primarily with the study of human behaviour as it is changed or directed under the social process of education."

—**Noll and Others** : *Journal of Educational Psychology*, 1948, p. 361.

शिक्षा-मनोविज्ञान की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Educational Psychology)

सर्वमान्य रूप से शिक्षा-मनोविज्ञान को शिक्षा का विज्ञान कहा गया है। निम्न तथ्यों की प्रस्तुति से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि इसकी प्रकृति विज्ञानमय है—

1. शिक्षा-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की व्यावहारिक शाखाओं में से एक है। मनोविज्ञान के सिद्धान्त, नियम एवं विधियों का प्रयोग करके यह विद्यार्थियों के अनुभवों और व्यवहार का अध्ययन करने में सहायक होता है।
2. मनोविज्ञान में जीवधारियों के जीवन की समस्त क्रियाओं से सम्बन्धित व्यवहार का अध्ययन होता है जबकि शिक्षा-मनोविज्ञान शैक्षणिक पृष्ठभूमि में विद्यार्थी के व्यवहार का अध्ययन करने तक ही अपने आपको सीमित रखता है।
3. शिक्षा-मनोविज्ञान 'शिक्षा क्यों' और 'शिक्षा क्या' जैसे प्रश्नों का उत्तर देने में अपने आपको असमर्थ पाता है। ये प्रश्न शिक्षा दर्शन द्वारा सुलझाए जाते हैं। शिक्षा मनोविज्ञान तो विद्यार्थियों को संतोषजनक ढंग से उचित शिक्षा देने के लिए उचित जानकारी, कौशल और तकनीकी परामर्श देने का प्रयत्न करता है।
4. शिक्षा-मनोविज्ञान की गिनती कलात्मक विषयों में की जाती है। इस मान्यता के पीछे इसकी प्रकृति और इसका स्वरूप ही है जो सभी तरह से विज्ञानमय ही नजर आता है। वैज्ञानिक पद्धति से प्राप्त ज्ञान में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

   (i) **वस्तुनिष्ठता एवं तथ्यात्मक ज्ञान**—**लेस्ट्रली** के अनुसार—"विज्ञान एक वस्तुनिष्ठ, तार्किक एवं व्यवस्थित अध्ययन पद्धति है।" शिक्षा-मनोविज्ञान के अन्तर्गत किए जाने वाले अध्ययन वस्तुनिष्ठ तथा तथ्यात्मकता से आपूरित होते हैं। तथ्यों का सतर्कतापूर्वक सम्यक संकलन और विभाजन किया जाता है। अध्ययनकर्ता अपने अध्ययन में व्यक्तिगत भावनाओं व पूर्वाग्रहों को नहीं आने देता।

   (ii) **निरीक्षण, परीक्षण एवं प्रयोग**—शिक्षा-मनोविज्ञान के अध्ययन का दृष्टिकोण अथवा परिप्रेक्ष्य वैज्ञानिक होता है। इसमें निष्पक्ष और व्यवस्थित निरीक्षण किया जाता है। निरीक्षण, परीक्षण और प्रयोग पर आधारित निष्कर्षों को मान्यता प्राप्त होती है। प्रयोगात्मक विधि इसका सर्वश्रेष्ठ परिलक्षण होता है जहाँ नियन्त्रित दशाओं में प्रयोग कर निरीक्षण किया जाता है और निष्कर्ष निकाला जाता है। उदाहरणार्थ—व्यक्तित्व या अधिगम के क्षेत्र में निरीक्षण, परीक्षण और प्रयोग के द्वारा अनेक नियमों और सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया।

   (iii) **कार्य-कारण सम्बन्ध**—वैज्ञानिक अध्ययन में कार्य तथा कारण का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है। शिक्षा-मनोविज्ञान के अध्ययन में कार्य-कारण सम्बन्धों पर विशेष महत्व दिया जाता है। किसी भी घटना के क्या कारण हो सकते हैं, यह निरीक्षित किया जाता है। जैसे—जिस अध्यापक में सम्प्रेषण क्षमता की कमी होती है, उसकी कक्षा में शोर अधिक होता है। यदि अध्यापन विधि विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार नहीं होती है तो अधिगम का स्तर निम्न होता है।

   (iv) **सामान्यीकरण या सार्वभौमिकता**—विज्ञान में विभिन्न प्रघटनाओं के सम्बन्ध में प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण और सार्वभौमिकता अनिवार्य होता है। शिक्षा-मनोविज्ञान में प्राप्त की गई एकरूपता के आधार पर कतिपय निष्कर्षों का प्रतिपादन किया जाता है तथा उन निष्कर्षों के आधार पर सामान्यीकरण निकाले जा सकते हैं। शिक्षा मनोविज्ञान, मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। मानव व्यवहार के अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण करने में विशेष जागरूकता की आवश्यकता होती है क्योंकि मानव व्यवहार में बड़ी अनिश्चितता होती है, जो विभिन्न कारकों से प्रभावित और परिवर्तित होता है, जैसे—स्थान, परिवेश, समय, थकान, साथी आदि।

   (v) **सत्यापनशीलता**—शिक्षा-मनोविज्ञान के परीक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों को पुनः परीक्षण के द्वारा सत्यापित किया जा सकता है। यदि आन्तरिक और बाह्य परिस्थितियाँ अपरिवर्तित हैं तो किसी विद्यार्थी का दो बार मापन करने पर समान परिणाम व अंक प्राप्त होंगे। उदाहरणार्थ—'बुद्धि सृजनात्मकता को प्रभावित करती है।' इस सिद्धान्त का सत्यापन किया जा सकता है।

शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्य (Objectives of Educational Psychology)

स्किनर (Skinner) के अनुसार—स्किनर ने शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्यों को दो भागों में विभाजित किया है—1. सामान्य उद्देश्य, 2. विशिष्ट उद्देश्य।

1. **सामान्य उद्देश्य** (General Aims)—**स्किनर** ने शिक्षा-मनोविज्ञान का सामान्य उद्देश्य केवल एक मानते हुए लिखा है—"शिक्षा-मनोविज्ञान का सामान्य उद्देश्य है—संगठित तथ्यों और सामान्य नियमों का एक ऐसा संग्रह प्रदान करना, जिसकी सहायता से शिक्षक सांस्कृतिक और व्यावसायिक लक्ष्यों को अधिक-से-अधिक प्राप्त कर सके।"

"The general aim of educational psychology is to provide a body of organized facts and generalizations that will enable the teacher to realize increasingly both cultural and professional objectives."

—**Skinner**

शिक्षा-मनोविज्ञान के सामान्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(i) सिद्धान्तों की खोज तथा तथ्यों का संग्रह।

(ii) बालक के व्यक्तित्व का विकास।

(iii) शिक्षण कार्य में सहायता प्रदान करना।

(iv) शिक्षण विधि में सुधार।

(v) शिक्षा उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की पूर्ति।

2. **विशिष्ट उद्देश्य** (Specific Aims)—शिक्षा-मनोविज्ञान, केवल व्यक्ति के सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति ही नहीं करता, अपितु वह उसके विशिष्ट लक्ष्यों की पूर्ति में भी सहायक होता है। यह व्यक्ति को उसकी योग्यता, क्षमता तथा कुशलता को पहचानने में योग देता है। शिक्षक, छात्रों की सीखने की सीमाओं को पहचानता है। **स्किनर** ने शिक्षा-मनोविज्ञान के 8 विशिष्ट उद्देश्य बताये हैं—(1) बालकों की बुद्धि, ज्ञान और व्यवहार में उन्नति किए जाने के विश्वास को दृढ़ बनाना, (2) बालकों के प्रति निष्पक्ष और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण का विकास करने में सहायता देना, (3) बालकों के वांछनीय व्यवहार के अनुरूप शिक्षा के स्तरों और उद्देश्यों को निश्चित करने में सहायता देना, (4) सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप और महत्त्व को अधिक अच्छी प्रकार समझने में सहायता देना, (5) शिक्षण की समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले तथ्यों और सिद्धान्तों का ज्ञान प्रदान करना, (6) शिक्षक को अपने और दूसरों से शिक्षण के परिणामों को जताने में सहायता देना, (7) शिक्षक को छात्रों के व्यवहार की व्याख्या करने के लिए आवश्यक तथ्य और सिद्धान्त प्रदान करना, (8) प्रगतिशील शिक्षण-विधियों, निर्देशन-कार्यक्रमों एवं विद्यालय-संगठन और प्रशासन के स्वरूपों को निश्चित करने में सहायता देना।

शिक्षा-मनोविज्ञान का अर्थ अपने में स्पष्ट है। शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग ही शिक्षा-मनोविज्ञान है। शिक्षा-मनोविज्ञान विद्यार्थी तथा सीखने की क्रियाओं के मध्य शिक्षक तथा छात्र का व्यवहार है। शिक्षा-मनोविज्ञान शिक्षा से अर्थ ग्रहण करता है, मनोविज्ञान से सामाजिक प्रक्रिया ग्रहण करता है और बालक में वांछित व्यवहार परिवर्तन द्वारा उसे सर्वांगस्वरूप प्रदान करता है।

शिक्षा-मनोविज्ञान का सम्बन्ध मानवीय क्रियाओं से है, इसलिये (i) यह मानव व्यवहार पर केन्द्रित है, (ii) निरीक्षण तथा खोज द्वारा प्राप्त तथ्यों तथा सूचनाओं का भण्डार है, (iii) इस ज्ञान भण्डार से नियम तथा सिद्धान्तों का निरूपण होता है, (iv) यह ज्ञान की खोज की एक पद्धति है, (v) इससे शिक्षा की समस्याओं का समाधान होता है, (vi) समस्त प्राप्त ज्ञान, नियम तथा सिद्धान्त शैक्षिक व्यवहार को आधार प्रदान करते हैं।

शिक्षा-मनोविज्ञान एक व्यावसायिक विषय के रूप में विकसित हुआ है। शिक्षक बनने वाले व्यक्ति के व्यवहार में भी परिवर्तन की आवश्यकता है, अतः शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन नवशिक्षक के लिये अपरिहार्य है।

कुल मिलाकर शिक्षा मनोविज्ञान अपने अर्थ, प्रकृति तथा क्षेत्र में स्पष्ट है और इसका उद्देश्य मंगलकारी है। यह एक ओर शिक्षा की प्रक्रिया के नियोजन में दिशा-निर्देश करता है तो दूसरी ओर कक्षागत परिस्थितियों में आनुभविक आधार प्रदान कर नई पीढ़ी के नवनिर्माण में योग देता है।

शिक्षा-मनोविज्ञान का क्षेत्र
(Scope of Educational Psychology)

शिक्षा और मनोविज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है। आज मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप में शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग होने लगा है इसकी सहायता से ही शिक्षण सम्बन्धी समस्त समस्याओं के समाधान का प्रयत्न किया जाता है। चूँकि शिखा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। इसलिए शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र बाल्यावस्था या किशोरावस्था तक ही सीमित नहीं है बल्कि व्यक्ति को सम्पूर्ण जीवन की समस्त शैक्षणिक परिस्थितियों तक विस्तृत है। इसके अध्ययन क्षेत्र एवं विषय-वस्तु को निम्नलिखित रूप से अभिव्यक्त किया जा सकता है—

1. **अभिवृद्धि एवं विकास** (Growth and Development)—शिक्षा-मनोविज्ञान में मनुष्य की शारीरिक अभिवृद्धि और शारीरिक, मानसिक भाषायी, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। इसमें मानव अभिवृद्धि तथा विकास का अध्ययन चार कालों—शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था के क्रम में किया जाता है। इसमें मनुष्य के विकास में उसके वंशानुक्रम और पर्यावरण की भूमिका का अध्ययन भी किया जाता है।

2. **मानसिक योग्यताएँ और उनका मापन** (Mental Abilities and their Measurement)—शिक्षा-मनोविज्ञान में मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक, दोनों प्रकार के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है और इन दोनों प्रकार के व्यवहार के कारक, प्रेरक एवं नियंत्रक तत्वों का अध्ययन किया जाता है। इन तत्वों में उसकी मानसिक योग्यताओं (बुद्धि, अभिक्षमता, चिन्तन एवं तर्क आदि) का बड़ा महत्व होता है। शिक्षा मनोविज्ञान में मनुष्य की मानसिक योग्यताओं और उनके मापन की विधियों का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है।

3. **मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन** (Mental Health and Adjustment)—मनोविज्ञान ने स्पष्ट किया कि बच्चों की शिक्षा एवं विकास में बच्चों एवं अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उनकी समायोजन क्षमता की अहम् भूमिका होती है। शिक्षा-मनोविज्ञान में बालकों और अध्यापकों के मानसिक विकास में बाधक एवं साधक तत्वों का अध्ययन किया जाता है और साथ ही कुसमायोजन के कारणों और सुसमायोजन की विधियों का अध्ययन किया जाता है।

4. **व्यक्तिगत विभिन्नता** (Individual Differences)—शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से कोई दो बालक समान नहीं होते। ऐसा क्यों होता है और इसका शिक्षा प्रक्रिया में क्या महत्व है, इस सबका अध्ययन भी इसके क्षेत्र में आता है।

5. **विशिष्ट बालक** (Exceptional Children)—प्रारम्भ में शिक्षा-मनोविज्ञान में केवल सामान्य बालकों का ही अध्ययन किया जाता था। परन्तु अब इसमें विशिष्ट या अपवादी बालकों का भी अध्ययन किया जाता है, जैसे—मेधावी, पिछड़े, विकलांग, अपराधी आदि। उनके व्यवहारों को नियंत्रित करने एवं उनकी शिक्षा के लिए विशिष्ट शिक्षण विधियों का विकास भी किया जाता है। आज यह सब भी उसके अध्ययन क्षेत्र में आता है।

6. **समूह मनोविज्ञान** (Group Psychology)—अब किसी भी देश में बालकों को समूह रूप में पढ़ाया जाता है। शिक्षा-मनोविज्ञान में व्यक्ति के अध्ययन के साथ उसके समूह का अध्ययन भी किया जाता है, उनके समूह मन और सामूहिक क्रियाओं का अध्ययन भी किया जाता है और समूह में व्यक्ति का व्यवहार क्यों बदल जाता है और कैसे बदलता है, इस सबका अध्ययन भी किया जाता है।

7. **सीखना** (Learning)—शिक्षा-मनोविज्ञान में सीखने के स्वरूप, उसके कारक, प्रेरक एवं नियंत्रक तत्वों, सिद्धान्तों और नियमों का अध्ययन किया जाता है और वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है और इसके आधार पर शिक्षण के सिद्धान्त एवं नियमों की खोज की जाती है। विभिन्न स्तर के बालकों के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का निर्माण किया जाता है।

शिक्षा-मनोविज्ञान की विधियाँ
(Methods of Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान की विधियाँ निम्नलिखित हैं–

1. आत्मनिरीक्षण या अन्तर्दर्शन विधि (Introspection Method)

इस विधि का प्रतिपादन संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया। यह मनोविज्ञान की परम्परागत विधि है। जब आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की मान्यता समाप्त हो गयी तब विलियम वुण्ट (William Wundt), टिचनर (Titchner), विलियम जेम्स (William James) आदि मनोवैज्ञानिकों द्वारा चेतन अनुभूति का अध्ययन करने वाले विज्ञान को मनोविज्ञान कहा गया तथा इस विधि को अन्तर्दर्शन विधि कहा गया। इस विधि में व्यक्ति स्वयं अपनी क्रियाओं का निरीक्षण करता है।

अन्तर्दर्शन (Introspection) का अर्थ है–"To look within" अर्थात् स्वयं के अन्दर देखना। अर्थात् अन्तर्निरीक्षण विधि में व्यक्ति स्वयं अपने अन्दर झाँकता है तथा अपनी मनोदशा का स्वयं अध्ययन या निरीक्षण करता है। **स्टाउट** (Staut) के अनुसार, "अपनी मानसिक क्रियाओं का क्रमबद्ध अध्ययन ही अन्तर्दर्शन कहलाता है।" जैसे किसी भी कविता या कहानी को पढ़ने के बाद उसके सम्बन्ध में प्रतिक्रिया देना कि वह कैसी लगी ? अन्तर्दर्शन विधि के द्वारा ही हम अपनी मनोदशा के अनुभव को बता पाते हैं।

गुण–

(i) इस विधि के माध्यम से व्यक्ति की मनोदशा के विषय में शीघ्र जानकारी मिलती है। कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाये गये प्रकरण, छात्रों पर उनका प्रभाव, कक्षा के वातावरण का प्रभाव आदि बातों का इस विधि के द्वारा शीघ्र ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

(ii) मनोविज्ञान के ज्ञान में इस विधि के प्रयोग से वृद्धि होती है।

(iii) अन्तर्निरीक्षण विधि का प्रयोग अत्यन्त सरल है। इसका किसी भी समय किसी भी स्थान पर और किसी भी परिस्थिति में शिक्षक व शिक्षार्थी की मनोदशा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

दोष–

(i) इस विधि में वैज्ञानिकता का अभाव पाया जाता है। इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्षों की जाँच अन्य लोगों द्वारा नहीं की जा सकती है। यह एक आत्मनिष्ठ विधि है।

(ii) इस विधि में एक साथ आत्म-निरीक्षण तथा स्वयं की मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन दोनों करना पड़ता है जिस कारण व्यक्ति का ध्यान दो भागों में बँट जाता है। फलस्वरूप व्यक्ति द्वारा किया गया निरीक्षण दोषपूर्ण हो जाता है।

2. गाथा वर्णन विधि (Anecdotal Method)

मनोविज्ञान में व्यक्ति अध्ययन की यह एक प्राचीन विधि है। इस विधि में मनोवैज्ञानिक व्यक्ति को अपने पूर्व अनुभवों का वर्णन करने को कहता है, जिसे सुनकर वह उसका रिकॉर्ड तैयार करता है। तत्पश्चात् मनोवैज्ञानिक उस रिकॉर्ड का अध्ययन कर व्यक्ति के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालता है। यह विधि एक आत्मनिष्ठ विधि है जो पूर्ण रूप से व्यक्ति के पूर्व अनुभवों पर आधारित होती है।

गाथा वर्णन विधि को भी मनोवैज्ञानिकों ने एक पूर्ण विधि नहीं माना है क्योंकि यह व्यक्ति के अनुभवों पर ही आधारित है और व्यक्ति कई बार पूर्व अनुभवों को ठीक-ठीक पुनःस्मरण नहीं कर पाते जिस कारण वह अपनी तरफ से कुछ जोड़-तोड़ कर नयी कहानी बना लेता है अतः स्किनर आदि मनोवैज्ञानिक इसे एक अमनोवैज्ञानिक विधि मानते हैं। अतः एक पूर्ण विधि के रूप में इसका प्रयोग न करके एक सहायक विधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।

3. प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)

प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक विधि है जिसमें प्रयोगकर्ता छात्रों के व्यवहारों का नियंत्रित वातावरण में अध्ययन करता है। प्रयोगात्मक विधि में परीक्षण के लिए कोई समस्या ले ली जाती है। उनका प्रयोगशाला परिस्थिति में निरीक्षण किया जाता है। वे तथ्य या सामग्री जो परीक्षण में बाधा डालती हो उन्हें प्रयोगशाला से बाहर रोक दिया जाता है जिससे वातावरण प्रयोगकर्ता के पूर्ण नियन्त्रण में हो जाता है। इस प्रकार नियन्त्रित परिस्थिति में व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं जैसे–प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, चिन्तन, विचार, अवधान, कल्पना, संवेग, संवेदना आदि का नियन्त्रित वातावरण में अध्ययन किया जाता है। यहाँ नियन्त्रित परिस्थिति से अभिप्राय है स्वतन्त्र चर में खुलकर जोड़-तोड़ किया जा सके तथा साथ ही अन्य सभी वे चर जिनका प्रभाव आश्रित चर पर पड़ता हो वे भी प्रयोगकर्ता के नियन्त्रण में हों।

प्रयोगात्मक विधि को स्पष्ट करते हुए **क्रो एवं क्रो** (Crow and Crow) ने लिखा है कि, "मनोवैज्ञानिक प्रयोग का उद्देश्य किसी निश्चित परिस्थिति या दशा में मानव व्यवहार से सम्बन्धित किसी विश्वास या विचार का परीक्षण करना है।"

इस प्रकार प्रयोगात्मक विधि में नियन्त्रित वातावरण में किसी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करके तथ्य एकत्रित किया जाता है।

गुण–

(i) प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक विधि है।

(ii) इस विधि में व्यक्ति की क्रियाओं का अध्ययन नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है। अतः इससे प्राप्त निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय होते हैं।

(iii) प्रयोगात्मक विधि एक वस्तुनिष्ठ विधि होती है। इससे प्राप्त निष्कर्षों की पुनः जाँच करना सम्भव हो पाता है।

दोष–

(i) इस विधि से प्राप्त निष्कर्षों में कृत्रिमता का गुण पाया जाता है। कितनी भी सावधानी रखने पर नियंत्रित परिस्थिति में व्यक्ति के व्यवहार में कृत्रिमता आ ही जाती है।

(ii) प्रत्येक परिस्थिति में नियंत्रित वातावरण का निर्माण सम्भव नहीं होता जैसे–क्रोध, भय आदि।

4. वस्तुनिष्ठ निरीक्षण विधि (Objective Observation Method)

व्यक्ति/बालक के व्यवहार का सूक्ष्म निरीक्षण करके उसकी मानसिक दशा का अनुमान लगाना ही वस्तुनिष्ठ निरीक्षण/अवलोकन विधि है। इसमें परीक्षक अपने विषयी का अध्ययन करने में अपने पूर्वानुभव का लाभ उठाता है और बालक की मानसिक परिस्थिति का अनुमान लगा पाता है।

इसमें सर्वप्रथम व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है तत्पश्चात् उसके व्यवहार का अनुभव किया जाता है और अन्त में अनुभव के आधार पर उसके व्यवहार की व्याख्या की जाती है। कॉलसनिक के अनुसार अवलोकन विधि दो प्रकार की होती है–

(i) **औपचारिक निरीक्षण**–औपचारिक निरीक्षण में व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण नियंत्रित दशाओं में किया जाता है।

(ii) **अनौपचारिक निरीक्षण**–अनौपचारिक निरीक्षण में अनियंत्रित परिस्थिति में व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। इसमें कक्षा में तथा कक्षा के बाहर छात्रों का अवलोकन किया जाता है तथा उसके आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। यह विधि शिक्षकों के लिए उपयोगी मानी

गयी है। इसमें कोई पूर्व निर्धारित योजना नहीं होती है। समय व आवश्यकतानुसार निरीक्षण कार्य किया जाता है।

गुण

(i) बाल अध्ययन में यह विधि अधिक उपयोगी होती है।

(ii) इसके अवलोकन के आधार पर अध्यापक छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन करा सकते हैं तथा उन्हें उचित दिशा प्रदान कर सकते हैं।

(iii) इसके द्वारा शिक्षक अपनी शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम आदि में संशोधन कर सकते हैं।

दोष

(i) यह विधि आत्मनिष्ठ होती है। इसमें प्रयोगकर्ता के निरीक्षण पर ही परिणाम आधारित होता है।

(ii) प्रयोज्य को परीक्षण का जब पता लग जाता है तो उसका व्यवहार बनावटी हो जाता है। अतः परिणाम की विश्वसनीयता घट जाती है।

5. मनोविश्लेषण विधि (Psycho-Analytical Method)

इस विधि के जन्मदाता सिंगमण्ड फ्रायड (Singmond Freud) नामक मनोवैज्ञानिक हैं। इस विधि में बालक के अचेतन मन का अध्ययन करके उसका उपचार किया जाता है।

फ्रायड ने मन को दो भागों में बाँटा है—चेतन तथा अचेतन। फ्रायड का विचार है कि व्यक्ति के व्यवहार पर उसके अचेतन मन का भी काफी प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति की बहुत-सी दमित इच्छाएँ जिसे वह लोक-लाज तथा समाज के भय से पूरा नहीं कर पाता, वह उसके अचेतन मन में जाकर संग्रहीत हो जाती हैं जहाँ वह सतत् क्रियाशील रहती हैं। जब भी कभी उन्हें प्रकट होने का मौका मिलता है तो वे प्रकट होने का प्रयास करती हैं। अतः व्यक्ति अनुचित व असामाजिक व्यवहार कर बैठता है। मनोविश्लेषक व्यक्ति के व्यवहार की तह में जाकर उसके व्यवहार का विश्लेषण स्वप्न विश्लेषण (Dream Analysis), शब्द साहचर्य (Word Association), स्वतन्त्र साहचर्य (Free Association), सम्मोहन (Hypnotism) आदि विधियों की सहायता से करता है। तत्पश्चात् उसका कारण जान लेने पर उसका निदान ढूँढ़ा जाता है।

गुण—

(i) व्यक्ति की मानसिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने की यह सर्वोत्तम विधि है।

(ii) इस विधि द्वारा उसके मन में छिपी भावनाओं को बाहर निकलवाने का प्रयास किया जाता है।

(iii) इस विधि द्वारा व्यक्ति की उन दमित इच्छाओं का पता लगाया जाता है जो उसके मस्तिष्क में गाँठ बनकर मनोरोगों का कारण बनती है, तथा इससे तनाव को कम किया जा सकता है।

दोष—

(i) इस विधि का प्रयोग काफी सावधानी से किया जाना चाहिए। **वुडवर्थ** (Woodworths) का कहना है कि—

''मनोविश्लेषण विधि के प्रयोग में सावधानी अति आवश्यक है। चूँकि इस विधि में काफी समय लगता है अतः इसे उसी स्थिति में प्रयुक्त करना चाहिए जब रोगी अन्त तक सहयोग देने को तैयार हो। अगर रोगी उपचार को पूरा नहीं कर पाता अर्थात् बीच में ही छोड़ देता है, तो रोगी की हालत पहले से भी खराब हो जाती है।

(ii) इस विधि के प्रयोग के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है तथा इसका प्रयोग सीमित है। हर समय हर परिस्थिति में इसका प्रयोग सम्भव नहीं होता।

(iii) इस विधि में अधिक समय लगता है।

6. व्यक्ति इतिहास विधि (Case History Method)

व्यक्ति इतिहास विधि का प्रयोग व्यक्ति विशेष की किसी खास समस्या का समाधान ढूँढ़ने के लिए किया जाता है। बच्चे विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आते हैं, उनमें से कुछ बच्चे ऐसे होते है जो समाज विरोधी या समस्या व्यवहार करते हैं तथा शिक्षण कार्य को सुचारु रूप से चलने नहीं देते। ऐसे बालकों को मनोवैज्ञानिक 'समस्या बालक' की संज्ञा देते हैं। उनका मानना है कि बालक परिस्थिति या वातावरण के कारण समस्यात्मक व्यवहार करता है जिसका समाधान किया जा सकता है। ऐसे बालकों की समस्या का स्वरूप व कारण का पता लगाने के लिए उसकी केस हिस्ट्री (Case History) तैयार की जाती है। इसमें व्यक्ति के जन्म, बीमारी, शारीरिक स्थिति, शारीरिक, मानसिक व सांवेगिक विकास, भाषा विकास, रुचियों, आदतों एवं बुद्धि उपलब्धि, व्यवहार, पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक वातावरण, वंशानुक्रम आदि से सम्बन्धित तथ्य एकत्रित किये जाते हैं। इन तथ्यों का विश्लेषण करके बालकों के मनोविकारों, उसके असामान्य व्यवहार का कारण तथा निदान ढूँढ़ा जाता हैं।

गुण—

(i) इस विधि का प्रयोग आसान है। इसमें विशेषज्ञ एवं प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं पड़ती। शिक्षक भी सहजता से इसका प्रयोग कर सकते हैं। सभी परिस्थितियों में किसी भी समय प्रयोग सम्भव है।

(ii) व्यक्ति की समस्या का कारण पता लगाकर निदान सम्भव होता है।

(iii) कम खर्चीली विधि है।

दोष—

(i) इसे एक वैध एवं वैज्ञानिक विधि नहीं माना जाता क्योंकि व्यक्ति का इतिहास तैयार करते समय प्रायः लोग सही तथ्य/दोष छिपा जाते हैं तथा बनावटी व गलत सूचना देते हैं।

(ii) इस विधि में अधिक समय व श्रम लगता है।

7. साक्षात्कार विधि (Interview Method)

साक्षात्कार विधि शिक्षा मनोविज्ञान की एक अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा शिक्षा-मनोवैज्ञानिक छात्र की योग्यता, अभिरुचि, अभिक्षमता आदि का परीक्षण करते हैं। इसमें आमने-सामने की परिस्थिति में विषय विशेषज्ञ द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर प्रयोज्य (जिसका साक्षात्कार लिया जाता है) को देना होता है। साक्षात्कार विधि में साक्षात्कारकर्ता विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के माध्यम से प्रयोज्य के व्यक्तित्व, उस विषय अथवा व्यवसाय के प्रति उसकी अभिरुचि को जानने का प्रयत्न करता है। इसमें पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप दो प्रकार का हो सकता है—(1) संरचित साक्षात्कार—जिसमें पूछे जाने वाले प्रश्नों को एक निश्चित क्रम में साक्षात्कार के पहले व्यवस्थित कर लिया जाता है तत्पश्चात् बालकों का इन्टरव्यू लिया जाता है तथा दूसरे प्रकार का साक्षात्कार असंरचित साक्षात्कार होता है जिसमें साक्षात्कारकर्ता समय व परिस्थिति के अनुसार प्रश्न पूछता है। इसमें प्रश्नों का स्वरूप पूर्व निर्धारित नहीं होता। इसमें सभी परीक्षार्थियों से अलग-अलग प्रश्न पूछे जाते हैं। दोनों प्रकार के साक्षात्कार में प्रयोज्य से प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण करके उसकी अभिवृत्ति, अभिरुचि, रुझान व व्यक्तित्व के शीलगुणों का पता लगाया जाता है।

गुण—

(i) यह विधि आमने-सामने की परिस्थिति में क्रियान्वित की जाती है जिसमें बालकों से सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं इसमें उनके द्वारा प्राप्त प्रश्नों के उत्तर से निश्चित निष्कर्ष आसानी से निकाला जा सकता है।

(ii) साक्षात्कार विधि में उच्च वैधता एवं विश्वसनीयता का गुण पाया जाता है।

(iii) साक्षात्कार विधि में बालक की भाव-भंगिमा का आकलन करके भी प्रयोज्य के उत्तर की सत्यता का पता लगाया जा सकता है।

दोष—

(i) साक्षात्कार विधि का पहला दोष यह माना जाता है कि आमने-सामने प्रश्न पूछे जाने के कारण प्रयोज्य के घबरा जाने की संभावना रहती है जिस कारण वह उत्तर जानते हुए भी सही उत्तर नहीं दे पाता और इस विधि से उत्तर अमनोवैज्ञानिक सिद्ध होते हैं।

(ii) प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग साक्षात्कार लिये जाने के कारण यह विधि अधिक समय, श्रम व धन खर्च करने वाली विधि मानी जाती है।

8. प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method)

शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन की एक प्रचलित व महत्वपूर्ण विधि है प्रश्नावली विधि। इस विधि में समस्या से सम्बन्धित प्रश्नों की एक लम्बी सूची बनायी जाती है जिसका उत्तर हाँ या नहीं अथवा सत्य/असत्य में देना होता है। इस प्रश्नावली को सम्बन्धित क्षेत्र के सभी व्यक्तियों को दे दिया जाता है तथा उन्हें यह प्रश्नावली भरकर अर्थात् प्रश्नों के उत्तर के साथ एक निश्चित समय सीमा में लौटानी होती है। तत्पश्चात् शोधकर्ता प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण करके बालकों/व्यक्तियों की आदतों/अभिवृत्तियों तथा रुचियों का पता लगाते है।

प्रश्नावली विधि दो प्रकार की होती है—

(i) खुली प्रश्नावली (Open Questionnaire)

(ii) बन्द प्रश्नावली (Close Questionnaire)

खुली प्रश्नावली में बालकों को ऐसे प्रश्न दिये जाते हैं जिन पर उनको अपने विचार प्रस्तुत करने होते हैं। जैसे (1) कार्य स्थल पर अपनी स्थिति में सुधार हेतु आप क्या सुझाव देना चाहेंगे? (2) छात्र अनुशासन को बनाये रखने हेतु अपने सुझाव दें आदि।

जबकि बन्द प्रश्नावली में प्रश्नों के उत्तर सत्य/असत्य या हाँ/नहीं में देने होते हैं। जैसे—(1) क्या कार्य स्थल पर आपके विचारों को महत्त्व दिया जाता है? हाँ/नहीं। (2) क्या आप अपने नियोक्ता की सेवाशर्तों से खुश हैं? हाँ/नहीं।

इस प्रकार प्रयोज्य को प्रश्नावली के प्रश्नों का उत्तर देना होता है जिसके आधार पर उसके व्यक्तित्व के शीलगुण, रुचि, योग्यता, कार्य एवं व्यवसाय के प्रति मनोवृत्ति आदि का पता लगाया जाता है। दोनों ही प्रकार की प्रश्नावली इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा बालक का अध्ययन करने में शिक्षा-मनोविज्ञान की सहायता करती हैं।

गुण—

(i) इस विधि द्वारा एक ही समय में अधिक से अधिक लोगों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया जा सकता है।

(ii) साक्षात्कार विधि की तुलना में यह विधि मितव्ययी तथा कम श्रम साध्य होती है।

(iii) इस विधि का उपयोग सरलता से शिक्षकों द्वारा भी किया जा सकता है।

दोष—

(i) इस विधि का सबसे बड़ा दोष है कि इसमें प्रश्नों के उत्तर जल्दी प्राप्त नहीं किये जा सकते अतः इसके द्वारा निष्कर्ष निकालने में काफी समय लगता है। कई बार एक ही व्यक्ति को कई-कई प्रश्नावली देनी पड़ती है।

(ii) प्रश्नावली विधि द्वारा प्राप्त उत्तर में झूठे व मनगढ़ंत उत्तर के मिलने की अधिक सम्भावना रहती है। बालक प्रायः सही बात छिपाकर गलत उत्तर देता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)

- शिक्षा है —**शिक्षा जीवनपर्यन्त प्राप्त होने वाला अनुभव एवं ज्ञान है**
- शिक्षण क्रिया का केन्द्र बिन्दु है —**छात्र**
- "शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये" या "सः विद्या या विमुक्तये" कथन है —**शंकराचार्य**
- ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है'' —**स्वामी विवेकानन्द**
- Education को E + Duco का संयोग कहा गया है —**E का अर्थ है भीतर से Duco का अर्थ है बाहर निकालना**
- 'psyche' का अर्थ होता है —**आत्मा**
- 'Psychology' का शाब्दिक अर्थ होता है —**आत्मा का ज्ञान**
- शिक्षा कैसा विज्ञान है —**नियामक**
- मनोविज्ञान की प्रकृति होती है —**वैज्ञानिक**
- किसके अनुसार, ''मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान है'' —**जेम्स**

शिक्षा मनोविज्ञान की परिधि—जैसे शिक्षा के तीन स्तम्भ होते हैं—शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम।

उसी प्रकार शिक्षा मनोविज्ञान के तीन क्षेत्र है—शिक्षार्थी, शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षण दशायें।

- मनोविज्ञान की सबसे अधिक प्रयोग की जानी वाली विधि है —**निरीक्षण विधि**
- शिक्षा के तीन ध्रुव कौन से हैं —**शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम**
- शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र है —**बालक**
- मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है, कथन है —**स्किनर**
- निरीक्षण विधि में किया जाता है —**दूसरों का अध्ययन**
- ''शिक्षा-मनोविज्ञान शिक्षण विधियों के चयन में शिक्षक की सहायता करता है'' कथन है —**स्किनर का**
- मनोविज्ञान से क्या तात्पर्य है —**व्यवहार का विज्ञान**
- मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है —**मन का विज्ञान**
- शिक्षण क्या है —**ज्ञानार्जन**

CTET (2011-2021) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन–सी प्रगतिशील शिक्षा की विशेषता है?
   (A) समय–सारणी और बैठने की व्यवस्था में लचीलापन
   (B) केवल प्रस्तावित पाठ्य–पुस्तकों पर आधारित अनुदेश
   (C) परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करने पर बल
   (D) बार–बार ली जाने वाली परीक्षाएँ

CTET 29.01.2015 (I-V)

1. (A) प्रगतिशील शिक्षा यह बताती है कि शिक्षा बालक के लिए है न कि बालक शिक्षा के लिए। यह शिक्षा का एक ऐसा वातावरण तैयार करती है जिसमें शिक्षार्थियों को सामाजिक विकास करने का पर्याप्त अवसर मिलता है। समय–सारणी में और बैठने की व्यवस्था में लचीलापन प्रगतिशील शिक्षा की मुख्य विशेषता है।

2. एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। निम्नलिखित में से कौन–सा क्षेत्र इस उद्देश्य के साथ संबद्ध है?
   (A) शिक्षा– समाजशास्त्र
   (B) सामाजिक दर्शन
   (C) मीडिया – मनोविज्ञान
   (D) शिक्षा – मनोविज्ञान

CTET 26.06.2011 (I-V)

3. (D) शिक्षा–मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिक्षण, अधिगम, स्मृति, अभिप्रेरणा, संवेग, चरित्र, विकास एवं वृद्धि व्यक्तित्व, सृजनात्मकता, रुचियाँ इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। ये सभी विषय–वस्तु एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का अवसर प्रदान करती हैं।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. शिक्षा मनोविज्ञान है–
   (A) व्यावहारिक विज्ञान
   (B) मानक विज्ञान
   (C) विशुद्ध विज्ञान
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
2. प्रयोगात्मक विधि को सर्वप्रथम प्रस्तावित किया
   (A) राइस एवं कार्नमैन ने
   (B) वुड ने
   (C) कोलिन्स व ड्रेवर ने
   (D) विलहेल्म वुण्ट ने
3. शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योंकि–
   (A) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके
   (B) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके
   (C) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके
   (D) इससे शिक्षक को आत्म–सन्तुष्टि मिल सके
4. बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य स्थान है–
   (A) अध्यापक का (B) प्रशासक का
   (C) बालक का (D) अभिभावक का
5. बाल मनोविज्ञान का केन्द्र-बिन्दु है
   (A) विद्यालय (B) शिक्षण प्रक्रिया
   (C) बालक (D) अच्छा शिक्षक
6. बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौन-सा कथन सर्वोत्तम है ?
   (A) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है
   (B) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं
   (C) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं
   (D) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं
7. बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र है–
   (A) केवल शैशवावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (B) केवल गर्भावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (C) केवल बाल्यावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (D) गर्भावस्था से किशोरावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
8. मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है–
   (A) विषय केन्द्रित शिक्षा
   (B) शिक्षक केन्द्रित शिक्षा
   (C) क्रिया केन्द्रित शिक्षा
   (D) बाल केन्द्रित शिक्षा
9. "मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का परित्याग किया, फिर अपने मन का और फिर अपनी चेतना का, अभी वह एक प्रकार के व्यवहार को सांजोये है।" कथन था–
   (A) टिचनर का (B) वुण्ट का
   (C) वुडवर्थ का (D) मैक्डूगल का
10. निम्न में से कौन-सी शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है ?
    (A) अन्तर्दर्शन (B) बहिर्दर्शन
    (C) अवलोकन (D) प्रयोगीकरण
11. शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है ?
    (A) बच्चे यथावत् वही सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है।
    (B) बच्चे अपने ज्ञान का स्वयं सृजन करते हैं।
    (C) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्ण ज्ञान नहीं होता है।
    (D) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है।
12. शैक्षणिक मनोविज्ञान ..... के माध्यम से शिक्षा में योगदान देता है।
    (A) विद्यार्थी की समस्याओं को समझने
    (B) शिक्षक की समस्याओं को समझने
    (C) पाठ्यक्रम को समझने
    (D) शैक्षणिक समस्याओं को समझने
13. शैक्षणिक मनोविज्ञान का ज्ञान, शिक्षक को सक्षम बनाता है कि वे
    (A) विद्यार्थियों का बेहतर मूल्यांकन करें
    (B) विद्यार्थियों को अनुशासित करें
    (C) विद्यार्थियों को बेहतर समझें
    (D) पाठ्यक्रम को बेहतर ढंग से पढ़ायें

व्याख्यात्मक हल

1. (A) मानव व्यवहार के परिमार्जन के लिए मानव व्यवहार का अध्ययन करने की आवश्यकता स्वतः ही स्पष्ट है। मनुष्य के व्यवहार को उन्नत बनाने की दृष्टि से जब व्यवहार का अध्ययन किया जाता है तो अध्ययन की इस शाखा को शिक्षा मनोविज्ञान के नाम से जाना जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना है 'शिक्षा' व 'मनोविज्ञान' अतः इसका शाब्दिक अर्थ है 'शिक्षा सम्बन्धी मनोविज्ञान' दूसरे शब्दों में यह मनोविज्ञान का व्यवहारिक रूप है व शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। अतः हम रिकनर के शब्दों में जानते हैं कि "शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से, जो व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान है, ग्रहण करता है।"
2. (D) विलहेल्म वुण्ट जर्मनी के दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक थे। विलहेल्म वुण्ट ने 1861

में मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगात्मक विधि का प्रारम्भ किया था, इसलिए उन्हें प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का पिता भी कहा जाता है।

3. (C) मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार से होता है। शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है। अतः अध्यापक को अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता लेनी चाहिए।

4. (C) बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में बालक का प्रमुख स्थान होता है। वर्तमान समय में बालकों को बालकेन्द्रित शिक्षा प्रदान की जाती है। बालकेन्द्रित शिक्षा में शिक्षा, शिक्षण पद्धति बालक की रुचि के अनुसार निर्धारित की जाती है।

5. (C) बाल मनोविज्ञान का मुख्य केन्द्र-बिन्दु बालक होता है, क्योंकि इसके द्वारा ही बालक में होने वाले शारीरिक परिवर्तन एवं व्यावहारिक परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है।

6. (A) बाल मनोविज्ञान के आधार पर प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है। उसमें विशिष्ट योग्यता व क्षमता होती है। इसलिए शिक्षा बच्चों की रुचि एवं विशिष्टता के अनुसार होनी चाहिए।

7. (D) बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत गर्भावस्था से किशोरावस्था तक की विशेषताओं का अध्ययन करते हैं, बाल विकास बालकों के व्यक्तित्व के विकास को समझने में सहायक होता है तथा इसमें बालकों की वृद्धि व विकास के आधार पर ही उन्हें निर्देशन प्रदान किये जाते हैं। निर्देशन प्रक्रिया बालक के जन्म से किशोरावस्था तक शिक्षकों व अभिभावकों द्वारा प्रदान की जाती है।

8. (D) मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान बाल केन्द्रित शिक्षा का होता है। मनोविज्ञान के द्वारा ही शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया जिसके परिणामस्वरूप बालक के व्यवहार को नियन्त्रित करके सकारात्मक दिशा प्रदान की जाती है।

9. (C) **वुडवर्थ** के शब्दों में–"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया फिर इसने मन का त्याग किया। पुनः इसने चेतना का त्याग किया। अभी वह व्यवहार की विधि को स्वीकार करता है।"

10. (A) शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि अन्तर्दर्शन विधि होती है। जिसके द्वारा विद्यार्थी या व्यक्ति के जीवन के इतिहास को जाना जाता है।

11. (B) **जीन पियाजे** के अनुसार, "बच्चे दुनिया के बारे में अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।" सृजनात्मकता स्व-स्फूर्ति होती है, जिसकी अभिव्यक्ति छात्र स्वयं के ज्ञान से करता है।

12. (D) **स्किनर** के शब्दों में– "शैक्षणिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में वह सब ज्ञान और विधियाँ सम्मिलित हैं, जो सीखने की प्रक्रिया से अधिक अच्छी प्रकार समझने और अधिक कुशलता से निर्देशित करने के लिए आवश्यक हैं।

13. (C) शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा शिक्षक बालक की रुचि अभिवृत्तियों, मूल प्रवृत्तियों, व्यक्तिगत विभिन्नताओं आदि को बेहतर ढंग से समझ पाता है और फिर शिक्षण कार्य में उपयुक्त विधियों का प्रयोग कर शिक्षा के प्रति उनकी रुचि को बढ़ावा देता है।